नुष्य बनो

रणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

ष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

ल फकीरचन्दजी महाराज

ानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— संन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ४-५० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल
सम्पादक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २५	अश्विन सं० २०३१ वि० अक्टूबर १९७४	संख्या १

विनती

सुनो मेरी विनती गुरु दाता ॥

तुमतो आये जीव उबारन, दया क्षमा के काज़ा ।
जो नहिं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा ॥गुरु०
मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी मानी गुमानी ।
दुखी जानकर चरण लगाओ, प्रेम भक्ति दे दानी ॥गुरु०
दुख क्लेश ने चहुँ दिस घेरा, मुझ सा दुखी न कोई ।
मुझे तार लो तब मैं जानूँ, पतित अधम गति सोई । गुरु०
भलों को तुम नहिं तारन आये, तुम्हें जुरे हैं प्यारे ।
इनकी लाज तुम्हारे हाथ है, तुम इनके रखवारे ॥गुरु०
राधास्वामी दीन दयाला, दीनन के हितकारी ।
बांह गहो दुख मेरो काटो, काल का बन्धन भारी । गुरु०

——:०:——

सम्पादकीय---

कठिनाई का समय

आज ऐसा कठिनाई का समय है कि लोगों को पेट पूर्त्ति के साधन से ही फुर्सत नहीं है और दुखी हैं। मँहगाई ने ऐसा भीषण रूप धारण किया हुआ है कि जीवन यापन महा कठिन हो रहा है। हमारे शासन कर्त्ता रात दिन लोगों की पुकार सुनते रहते हैं मगर इस समस्या को हल नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य करे भी तो क्या करे।

'भूके भजन न होय गुपाला', वाली कहावत चरितार्थ होती है। यदि परमार्थ की ओर ध्यान जाय भी तो कैसे जाय। परमदयालजी महाराज ने अपने एक लेख में स्पष्ट लिखा है कि सन्त महात्माओं से आशा की जा सकती थी मगर उनके हृदय भी स्वच्छ नहीं हैं, इसलिये उनसे भी आशा नहीं की जाती। ऐसी स्थिति में मनुष्य को क्या करना चाहिये यह एक मुख्य सवाल है। जब हमारी सरकार ही मौन है तो तुरन्त कोई हल तो दिखाई देता नहीं। हां, मनुष्य अपने ही बल पर चल कर अपना जीवन यापन कर सकता है। उसके लिये कुछ बातें ऐसी हैं, जिन पर चल कर मनुष्य अपनी कठिनाई को हल कर सकता है।

(१) प्रत्येक व्यक्ति को हर ओर से समय बचा कर अपनी आमदनी का साधन बढ़ाना चाहिये और अधिक से अधिक समय तक काम करना चाहिये।

(२) घर में जितने स्त्री पुरुष बच्चे हों यदि वह कुछ काम करने

योग्य हों तो उनको किसी न किसी काम में जो परिस्थिति के अनुकूल हो, लगा देना चाहिये ताकि कुछ आमदनी बढ़ सके।

(३) घरों में अब तक बहुत से खर्च होते रहते हैं जो अनावश्यक होते हैं उनको कम कर देना चाहिये।

(४) नित्य प्रति के खर्चों में भी जिनके बिना काम चल सकता हो कमी कर देनी चाहिये।

(५) आज कल दिखावा, तड़क भड़क का समय नहीं रहा। जिभ्या का स्वाद भी आदमी को दुखी करता है अतः ऐसे पदार्थों को त्याग देना चाहिये।

(३) आपका जीवन सादा बन जाय अर्थात रहन सहन सादा, खान पान सादा हो अर्थात खर्चीला न हो।

इन बातों के पालन में लोक लाज और मान मर्यादा बड़ी दुखदाई होती है मगर आपत्तिकाल में इन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिये अन्यथा आप अपनी परेशानी को दूर करने में असमर्थ रहेंगे। यह बातें साधारण या मध्यम आमदनी वालों की दृष्टि से लिखी गई है। जिनके पास रुपया है या जिनकी आमदनी बहुत है वे तो इन बातों की ओर ध्यान दे ही नहीं सकते।

ऐसी स्थिति में जीवन बिताते हुये आप थोड़ा बहुत समय मालिक के सुमिरन ध्यान में लगाते रहिये।

मालिक की याद तो वैसे हर समय हो सकती है। चलते फिरते उठते बैठते भी आपका सुमिरन चल सकता है। अपने कल्याण की प्रार्थना करते रहिये। यह कुछ ऐसी बातें हैं जिनके पालन से मेरी समझ में आपकी बहुतसी कठिनाई हल होती रहेगी और आपका मन अपनी आवश्यकताओं से चिन्तित न रहेगा। आगे मौज आधीन।

देवीचरन 'मीतल'

शिव शब्द सागर दो भाग—महर्षि शिवव्रतलालजी महाराज के शब्दों का संग्रह। मूल्य प्रत्येक भाग ७) रु० दोनों भागों के १४) रु० डाक खर्च ३) रु०।

दयाल फकीर की जीवनी (फोटो सहित) मूल्य २)५० डाक खर्च १)५० कुल ४) रु०।

अनुभवसार दाता दयाल के परमभक्त श्री कुबेरनाथ श्रीवास्तव एडवोकेट, रसरा द्वारा लिखित। इसमें दाता दयालजी महाराज तथा परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज के चुने हुये बचन तथा श्री कुबेरनाथजी के अनुभव का वर्णन है। मूल्य ४)। पता—सैक्रेटरी मान-वता मन्दिर होशियारपुर अथवा श्री कुबेरनाथ श्री वास्तव एडवीकेट रसरा (बलिया)।

'मानव मन्दिर' के दिसम्बर मास के अंक में राय साहिब सुरेन्द्र-नाथजी को परम दयालजी महाराज की ओर से समर्पित श्रद्धांजली प्रकाशित की जाएगी। जो सज्जन 'मानव मन्दिर' नहीं पढ़ते, यदि वे चाहें तो यह पुस्तक सेक्रेटरी मानवता मन्दिर, होशियारपुर को लिख कर मँगा सकते हैं। कोई मूल्य नहीं होगा।

——०——

शोक समाचार

खेद है कि परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज के छोटे भाई राय साहब सुरेन्द्रनाथ जी ता० ६ सितम्बर १९७४ को हनमकुंडा में चोला छोड़ गये। आप दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलालजी के शिष्य थे और उनके परम भक्त थे। आप परमदयालजी महाराज को पिता के समान मानते थे और बड़ा आदर सम्मान रखते थे। मालिक से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को परमशान्ति प्रदान करे और अपनी गोद में ले ले।

देवीचरन मीतल

कृष्णदासजी की कथा

कृष्णदास जी गलता (जयपुर) के रहने वाले थे। जहाँ और जब कभी भी साधू मिले इनके लिये कमल के फूल खिल गये और वह भँवरा बन कर उनके चारों ओर प्रेम से मँडलाने और परिक्रमा करने लगे। यह बड़े दानी हुये हैं। अतिथि सेवा को मुख्य समझते थे। यहां तक कि इसी के पीछे लोग इन्हें पागल समझने लगे।

एक बार यह गुफा में बैठे थे। जब समाधि से उठे देखा कि एक भूखा सिंह (शेर) आया है और गुफा के किनारे बैठा हुआ है। इन्होंने उसे नरसिंह का रूप समझा उठे और अपनी टांग कुल्हाड़ी से काट कर उसके सामने रख दी। सिंह ने सूँघ कर उसे छोड़ दिया। तब आप उससे कहने लगे "भगवन्! आपके इस रूप का यही भोजन है। आप मेरे अतिथि हैं। यदि मेरी सेवा स्वीकार नहीं करते तो समझ लीजिये कि मुझे बड़ा दुख होगा। मेरा प्रण जाता रहेगा और फिर कोई अतिथि सत्कार न करेगा।"

सिंह ने सिर हिलाया मानो उनकी बातों को समझ रहा था। मुँह से टाँग के लुहू को चाटने लगा और जब चाट चुका तो नरसिंह के रूप में प्रगट होकर उसे उनके शरीर से जोड़ दिया। टांग फिर ठीक होगई। वह दर्शन देकर अन्तर्ध्यान होगये।

शब्द

प्रेमी तजै न अपने पन को, लाख कलेश उठावै।
पपिहा स्वांति बूँद को चाहै, लाख पियास सतावै ॥२॥
सती न छोड़ै सत मर्यादा, चिता शरीर जलावै।
सूरा रन से कभी न भागे, बान कलेजे खावै ॥२॥
साधू साधूपन नहिं त्यागे, जग के फन्द न आवै।
भक्त न छोड़ै भक्त भाव को, जिये कि वैह मरजावै ॥३॥
धर्मी धर्म की आज्ञा पालै, नहीं अधर्म कमावै।
कर्मी कर्म करे निष्कर्मा, स्वारथ चित नहिं लावै ॥४॥

प्रवचन

परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ९-८-७४

विश्वधर्म ?

कल सुबह श्री मामचन्द शर्मा (मेरी मामियां) की लाश मन्दिर में पड़ी थी तो पाठ के बाद दो महात्मा मन्दिर में आये। उनमें से एक तो विश्वधर्म के सिलसिले में बहुत जगहों पर उपदेश करता था। उसने बताया कि श्री सुशीलकुमार जी मुनि और सन्त कृपाल-सिंह जी आपकी बहुत इज्जत और मान करते हैं। वह आपको विश्वधर्म सम्मेलन में जो नौम्बर १९७४ में होगा, बुलायेंगे। उसने बताया कि वह पहिले भी मुझसे परिचित हैं किन्तु मुझे पता नहीं कि वह कौन हैं, मगर वह बहुत विद्वान मालूम होता था। ब्रह्मचारी भी मालूम होता था। उसने मेरा साहित्य माँगा और कुछ कवितायें भी मांगीं। मैंने उसको महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के शब्द जो 'शिव शब्द सागर' नामी पुस्तकों के दो भागों में छपे हैं और अपनी तीन पुस्तकें जो मैंने पिछले तीन विश्वधर्म सम्मेलनों पर लिखी थी, वह भेंट की और अपनी लिखी तीन पुस्तकें 'निर्वाण' 'निर्वाण से परे' और 'हद बेहद से परे' भी उनको भेंट की, पुस्तकों के नाम पढ़ कर उसने कहा कि आप अनुभवी पुरुष हैं और आपको इस समय वर्तमान भ्रष्टाचार, मिलावटें और जो अत्याचार हो रहे हैं उनके दूर करने का काम करना चाहिये। उस समय मैंने उसको कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि वह समय ही ऐसा था। श्री मामचन्द के दाह संस्कार का प्रबन्ध करना था।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या हम साधु महात्मालोग या मौजूद गद्दीपति इस वर्तमान समय में मिलावटों को बन्द करने,

भ्रष्टाचार को दूर करने या वर्तमान वातावरण या स्थिति को ठीक करने के लिये कुछ कर सकते हैं ? लैक्चर होते हैं। विश्वधर्म सम्मेलन बुलाये जाते हैं और लाखों रुपये खर्च होते हैं। मेरी आत्मा कहती है कि ये कुछ नहीं कर सकते। हां, जुबानी जमा खर्च करेंगे। क्योंकि यह संसार मिलावट की रचना है. पांच तत्व मिलते हैं तब शरीर बनता है। पांच कर्मेन्द्रियां हैं। इनसे मनुष्य कर्म करता है, पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं। यह भी काम करती हैं। सन्त जीव को इस मिश्रित जगत से दूसरे शब्दों में मिलावट के जगत से परे लेजाने का उपदेश देते हैं। यह जगत ऐसा ही है। इसको बनाने वाले, जिसे संतकाल कहते हैं, ऐसा ही बनाया है। मैंने उस महात्मा को संकेत किया कि यहा लाखों सन्त, महात्मा, पीर, पैगम्बर, जैन, बुद्ध आये और अनेक प्रकार की विचार धारायें छोड़ गये। इसलिये आज संसार की यह दशा है। मैंने ऐसा समझ कर यह सोचा कि क्या होगा इस लाइन में काम करने से। प्रकृति की मिलावट की रचना में सुख भी है,आनन्द भी है और दुख भी है। कैसे ? शरीर बन जाता है। यदि यह तत्व शरीर में सम अवस्था में रहें तो सुख है। जहां इनमें घटा बढ़ी आई कि दुख है। मन यदि शिव संकल्प करता रहे तो सुख अन्यथा दुख। ऐसे ही आत्मा है, आत्मा प्रकाश स्वरूप है। यदि यह अपने स्वेत रंग के प्रकाश में मनुष्य के अन्दर प्रगट होता रहे तो आदमी को शान्ति है। यदि हरा या पीला प्रकाश दिखाई आता है तो आदमी को आत्मिक शान्ति नहीं मिल सकती यह मेरा अनुभव है।

संसार में उन महापुरुषों की रेडियेशन, उनके बचन और उनकी दृष्टि दूसरों को सुख आनन्द और शान्ति दे सकती है जो अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अवस्था को सम अवस्था में रखते हैं। आज कल लोग मिलावट के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं।

एक स्थूलरूप से मिलावट है जो आजकल हो रही है अर्थात खाद्य पदार्थों में मिलावट, दवाइयों में मिलावट, दवाइयां नकली। यह तो है आम दुनियाँ की मिलावट मगर हम महात्मा लोग क्या करते हैं ? किसी के अन्तर तो जाते नहीं, न स्वप्न में, न समाधि में और न मरते समय ले जाते हैं मगर मिलावट यह करते हैं कि लोगों को प्रगट करते हैं या अपने चेलों से प्रगट कराते हैं कि गुरु महाराज ने यह चमत्कार कर दिया। फिर वह बाना ऐसा पहिन लेते हैं कि दूसरे यह समझें कि यह महात्मा हैं या साधु हैं। ऐसी मानसिक मिलावट करने वालों से कैसे कोई आशा कर सकता है कि इनके संस्कारों से दूसरों पर कोई अच्छा प्रभाव पड़ेगा। दुनियांदार तो गिरे हुये हैं ही, वह तो धन के लालच वश हेरा फेरी करते हैं। हम महात्मा लोग अपने मान सम्मान और भेंट के लिये यह काम करते हैं। राजनैतिक लाइन वाले स्वयं अपनी आत्मा से पूछें कि वह क्या करते हैं। प्रेसीडेन्ट निक्सन की ही दशा देखलो कि इतने बड़े देश का प्रेसीडेन्ट और उसने क्या किया। हमारे मंत्री और एम० पी० भी अपने आपको देखें कि वह क्या करते हैं।

मेरा दिमाग काम नहीं करता कि किस ख्याल को लेकर मुनि सुशीलकुमार जी महाराज व सन्त कृपालसिंह जी महाराज या अन्य महात्मा विश्वधर्म सम्मेलन बुला बुला कर लाखों रुपया पबलिक का व्यय करते हैं। मैंने अपने आपको सतज्ञान दाता कह कर प्रगट किया है और यही आज्ञा थी मुझे महर्षि शिवव्रतलालजी महाराज की। उन्होंने मुझे सन १९३३ ई० में आम सत्संग में आज्ञा दी थी कि फकीर चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना। जब मैं १९४२ ई० में बाबा सावनसिंहजी के पास गया तो उन्होंने भी मुझे आज्ञा दी कि फकीर ! निर्भय होकर काम करो। मैं तुम्हारा पुश्त पनाह रहूंगा। इसलिये नम्रता और दीनता के भाव से मैं इन

समस्त धर्मावलम्बियों, पंथ वालों, गुरुओं और महात्माओं से कहता हूं कि धर्म से ही कल्याण होता हैं और धर्म ही रक्षा करता है। इसलिये आप सबको चाहिये कि पहिले आप स्वयं एक प्लेटफार्म पर इकट्ठे हों और आपस में निर्णय करें कि सचाई क्या है और इस समय किन नियमों या उसूलों की आवश्यकता है जिससे मानव जाति का कल्याण हो सके। फिर जिस परिणाम पर आप आयें उसको पब्लिक में प्रगट किया जाय। मेरी बुद्धि यह कहती है।

जीव निबल अबल और अज्ञानी हैं। अपने मस्तिष्क में तरह तरह के विचार ले लेते हैं और गलत विचार लेकर अपने अपने मजहबों, गुरुओं और महात्माओं के गुण वर्णन करते नहीं थकते। कल जब श्री मामचन्द का अन्तिम समय आया तो वह सब से मिला फिर उसको हिचकी लग गई और पुतलियाँ उलट गईं। मैं भी वहां था और अपने मन में प्रार्थना करता था कि इसको कष्ट न हो और प्राण निकल जाँय। मैंने नब्ज पर हाथ रक्खा। नब्ज चल रही थी और दो मिनट बाद बन्द होगई और उसके प्राण निकल गये। रात को भूपसिंह मेरे मकान पर मेरे पास आया और कहने लगा कि महाराज! आपने उसके प्राण बड़ी आसानी से निकाल दिये। भूपसिंह मेरी प्रशंशा कर रहा था और मुझे उसकी बातों पर हँसी आरही थी। ऐसे ही दीवानी दुनियाँ ऐसी ऐसी बातें कह कर गुरुओं के पर निकाल देती है यद्यपि उनके पर नहीं होते। मैंने ऐसी घटनायें बहुत सुनी हैं। जब सत्संगी लोग मरते हैं तो कई कई दिन तक कष्ट भी उठाते हैं और फिर कहते हैं कि गुरु महाराज आये और उनको ले गये।

मैं यह लेख इन महात्माओं, गुरुओं और पंथाइयों के चरण कँवल में भेंट करना चाहता हूं और उनसे कहना चाहता हूं कि जब इस प्रकार की मिलावट की बातों का प्रोपेगंडा होता है तो यह

कैसे आशा कर सकते हैं कि इनके प्रचार से संसार में सुख और शान्ति आसकती है अथवा अज्ञान और भ्रम दूर हो सकते हैं। मेरे विषय में लोग इतनी करामातें बताते हैं कि यदि मैं उनको प्रकाशित करने की आज्ञा दूँ तो एक बड़ी भारी पुस्तक बन सकती है। यह ठीक है कि साधारणतया जो कुछ इच्छा या वासना करता हूं वह ९० व ९५ प्रतिशत पूरी हो जाती हैं लेकिन क्यों होती हैं ? यह मुझे नहीं मालूम। सम्भव है गलत हो मगर मेरी समझ में यह आया है कि जो होने वाली बात होती है वही किसी सन्त या जीवन मुक्त या वीतराग पुरुष के मुँह के अन्तर से स्वाभाविक निकलती हैं।

मामचन्द बीमार हुआ और २॥ महीने बीमार रहा किन्तु मेरे मन में कभी यह ख्याल ही पैदा नहीं हुआ कि यह बच जाय या जिन्दा रहे। मैं सच्चे दिल से यह अवश्य इच्छा करता रहा कि इसको कोई कष्ट न हो। मालुम नहीं कि क्यों मेरे हृदय में यह इच्छा पैदा नहीं होती थी कि इसका रोग चला जाय या यह जीवित रहे और फिर मेरी सेवा करता रहे। मेरी बुद्धि काम नहीं करती। मैंने जीवन भर बड़ी दौड़ धूप की। बहुत साधन अभ्यास किया और सचाई और नेकी से चला यद्यपि गिरता भी रहा और अब भी गिरता रहता हूं। अब केवल शरणागतम् पर आया हूं।

मालिक तेरी इच्छा पूरी हो। गले में पड़ा हुआ ढोल है, बजाता हूं। यह मेरा कर्म भोग है मगर अब इस काम में ममत्व नहीं रहा।

मैं आशा करता हूं कि जो सज्जन इस लेख को पढ़ें वह अपने गुरुओं या महात्माओं को, जहाँ उनका विश्वास है, पढ़ावें और जो कुछ उनके गुरु या उनके पथ-प्रदर्शक कहें उस पर अमल करें।

मुझे किसी बात का दावा नहीं है। हर महात्मा या पंथ वाले को पूरा अधिकार देता हूं कि वह मेरा खंडन कर जांय। मेरे जिम्मे

तो एक ड्यूटी है और मैं उने पूरा करना चाहता हूं। संसार में हकीकत, असलियत और सचाई को प्रगट कर चला जो पहिले गुप्त या सीना ब सीना थी।

सत्संग

(परम दयाल फकीरचन्दजी महाराज)

(मानवता मन्दिर होशियारपुर २१-८-७४)

सन्त सतगुरु की आवाज या सत ज्ञान का प्राकट्य

मैं बूढ़ा होगया हूं। इस नौम्बर में मुझे ८८ वां वर्ष आरम्भ हो जायगा। आज मैं डाक्टर के पास गया था। उसने मेरा ब्लड-प्रैसर देखा और दिल की जांच की और कहा कि महाराज अभी आप ३०-३५ वर्ष और जियेंगे। मेरे बुढ़ापे को देख कर कई आदमी मुझ से प्रश्न करते हैं कि आपके बाद कौन काम करेगा। आज कल के गुरुइज्म में जब गुरु चोला छोड़ते हैं तो अपने लड़कों को या अपने परिवार को ही गद्दी दे जाते हैं। बाबा सावनसिंह जी महाराज गद्दी पोते को दे गये। हंसाजी गद्दी अपने लड़के को दे गये। निरंकार साहब ने भी ऐसा ही किया। सन्त कृपाल जी भी जिनको बाबा सावनसिंह जी महाराज भेद ज्ञाता बताते थे, वह भी अपने लड़के को वसीयत कर गये जैसा कि समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है। और भी कई उदाहरण ऐसे मिलते हैं।

मैं अपने आप से पूछता हूं कि फकीर ! जब सब गुरुओं की यही दशा है तो तू भी मानवता मन्दिर अपने लड़के को देजा या वसीयत करजा।

ऐ भोले भाले जीवो ! माया ग्रस्त और भ्रम अज्ञान के शिकार हुए लोगो ! सुनो ! मैं इस संसार में फकीर के चोले में केवल इस-लिये आया हूं कि दुनिया को सत्यता, असलियत और सतज्ञान बता जाऊँ । गुरु नाम है अन्धकार को दूर करने का । गुरु हड्डी मांस या मनुष्य का नाम नहीं है, इस अज्ञान के गुरुइज्म ने हम मूर्ख अज्ञानियों और संसार की चाह में फँसे हुये लोगों की आंखों में मिट्टी डाल कर हमारा धन और इज्जत लूटी है और इस गलत गुरुइज्म, गलत ईश्वर भक्ति और धर्म की गलत समझ ने मानव वंश को बुरी तरह बांट दिया है ।

हमने सतज्ञान, सचाई और असलियत और शान्ति को प्राप्त करना है । एक आदमी को जहां से यह वस्तु मिल जाय वह वहां से प्राप्त करके अपना जीवन बनाले लेकिन एक ही आदमी की खास विचारधारा से सबको लाभ नहीं हो सकता इसलिये मैं गुरु आज्ञा वश आज ३५-३६ वर्ष से इस सचाई की घोषणा करता हुआ चला आरहा हूं कि ऐ भोले इंसान ! तुझको जो कुछ भी तुम्हारे, स्वप्न, समाधि और जाग्रत में तुम्हारे अन्तर या बाहर दिखाई आता है या प्रगट होता है वह तेरे अपने ही ख्याल और विश्वास का फल है । सन्त कृपालसिंह जी के चोला छोड़ने के बाद एक आदमी रामचन्द्र तिवारी दहली से मुझे लिखता है कि उसने २२ अगस्त को जब सन्त कृपालसिंह जी महाराज की अर्थी तैयार की जारही थी मुझको वहां अर्थी के पास खड़े देखा । वह लिखता है कि आप नंगे सिर कोट पहिने हुए और सफेद पाजामा पहिने हुये और अपनी कमर पर हाथ रख कर खड़े थे लेकिन मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैं तो होशियारपुर में था और वहां नहीं गया । मनुष्य के दिमाग पर कोई बात सुन कर या पढ़ कर या प्रालब्ध कर्म के अनुसार जो संस्कार पड़े हुये होते हैं वही दृश्य बन कर सामने आते हैं । यह

सब माया है। इनकी असलियत कुछ नहीं है। इन विचारों और इन दृश्यों के कारण जिनको लोगों ने गुरु के चमत्कार समझा और गुरुओं ने सचाई वर्णन नहीं की, यह सब गद्दियां, डेरे, पंथ और सम्प्रदाय बन गये। यह सब अज्ञान का परिणाम है। मैंने भी श्री 'कृषक', 'दयालदास', 'प्रेमानन्द', 'आनन्दराव', 'नन्दलाल', कमालपुर वाली माई और कुछ और आदमियों को नाम दान दिया और सत्संग कराने की आज्ञा दी हुई है। लेकिन इसलिये नहीं कि मेरे बाद कोई डेरा बना कर उसके मालिक हो जांय और उस पर अधिकार कर जायें किन्तु इसलिये कि जब इनका रूप लोगों के अन्तर प्रगट होगा और चमत्कार दिखायेगा और उनकी कही हुई बात सच हो जायगी या पूरी हो जायगी तो यदि वह स्वार्थी नहीं होंगे तो उनको सच्चा ज्ञान हो जायगा।

मैं डेरों गद्दियों के विरुद्ध नहीं हूं। इनके बिना संसार का भी गुजारा नहीं है किन्तु दुनियां को धोके में रख कर लोगों से धन दौलत लेकर अपनी सन्तान, अपने मान सम्मान और अपने प्रयोजन के लिये प्रयोग करना मेरे विचार में जुर्म है।

हिन्दू जाति, जैन, बुद्ध आदि सब ही कर्म की फिलोस्फी को मानते हैं। यदि यह सच है तो जिन महात्माओं ने बात को पर्दे में रख कर जब कि वह किसी के अन्तर तो जाते नहीं थे और न जीवों के अन्त समय उनकी आत्मा को ले जाते थे लेकिन प्रोपेगंडा यह करवाते थे कि गुरु उनके अन्तर जाकर यह काम करते हैं, इससे मान आदर और धन लोगों से लेते थे, उनका क्या परिणाम हुआ होगा या होगा।

ऐ महात्माओं ! ऐ गद्दीपतियो ! ऐ गुरु कह लाने वालो ! यह जीवन चार दिन का है। यहां से अमीर भी चले गये, बड़े बड़े पीर भी चले गये और निर्धन भी चले गये। इस चार दिन के जीवन के

लिये अपने अन्तःकरण को कुचल कर इस झूठी और नाशवान दुनियाँ में अनुचित ढंग से मान आदर प्राप्त करते हो। अपने ऊपर दया करो और दुनिया के साथ धोका न करो।

गुरु नाम है ज्ञान का, लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आता था। यह समझ देने के लिये मेरे सतगुरु महाराज ने मुझे यह काम दिया था और कहा था कि फकीर ! मेरा हुक्म मानो तो तुमको सच्चा सतगुरु राधास्वायी दयाल सत्संगियों के रूप में मिलेगा। जिन सत-संगियों द्वारा मुझे यह ज्ञान हुआ कि असलियत क्या है, उनके अज्ञान को मिटाने के लिये मैंने उनको नाम दान देने और सत्संग कराने की आज्ञा दी कि उनको असलियत और सचाई का ज्ञान हो जाय और वह अपना जन्म बनालें।

आज मैं तुमको सच्चे सतगुरु दाता दयालजी की बाणी सुनाता हूं ताकि तुमको यह समझ आजाय कि गुरु क्या है—

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी ॥
गुरु को मानस जान कर, भक्ती का करें व्यवहार।
सो प्राणी अति मूढ़ हैं, कैसे जांय भव पार ॥
देह के बने अभिमानी ॥
गुरु को मानस जान कर, सीत प्रसादी ले।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके ॥
गुरु तत्व न जानी ॥
गुरु को मानस जान कर, मानस करे विचार।
सो, नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार ॥
मोह के फाँस फँसानी ॥
गुरु को मानस जान कर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल ॥
पड़े योनी की खानी ॥

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट ।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट ।।
बात बूझे मन मानी ।।
गुरू भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान ।।
नहिं गुरु रूप पिछानी ।।
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकाश ।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास ।।
रहे गुरु पद घट ठानी ।।
सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरू का रूप ।
शब्द गुरू की परख बिन, डूबे भरम के कूप ।।
नर जन्म गवानी ।।
गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार ।
गुरु मत गुरु गम जो लखे, फिर नहीं भव भय भार ।।
कमल जैसी गति आनी ।।
राधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय ।
जे नहिं माने बचन को, उरझ उरझ उरझाय ।।
कौन समझे यह बानी ।।

ऐ भारत वासियो ! ऐ मेरे साहित्य को पढ़ने वालो ! ऐ मेरा सत्संग करने वालो ! यदि तुम्हारा अन्तःकरण मानता है कि मैं सचाई पर हूं और जो मैं कहता हूं यह असलियत है तो इस सचाई के फैलाने के लिये मानवता मन्दिर की सहायता करो ताकि इस समय जो भ्रम व अज्ञान फैला हुआ है जिसके कारण मानव वंश विभिन्न गद्दियों, पंथों और धर्मो में बट गया है और यह संसार एक शोकागार बन रहा है, इस प्रचार से लोगों को सच्ची समझ आजाय और संसार में शान्ति आये । तुम लोग भ्रम और अज्ञान के विचारों में

आकर कितना रुपया मन्दिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों और गुरुओं की भेंट करते हो, क्या सचाई के प्रचार के लिये कुछ सहायता नहीं कर सकते ? लेकिन इस बात का ख्याल रक्खा जाय कि अपने बाल बच्चों का पेट काट कर न दिया जाय ।

भारत वासियो ! मैं सत का चोला लेकर इस संसार में आया हूं । मैं देखना चाहता हूं कि अया दुनिया में सचाई भी कुछ प्रभाव रखती है या नहीं । सांसारिक जीवन में तो मैंने आजमाया है और मुझे इस समय तक कोई कष्ट नहीं हुआ । यह परमार्थिक काम है । इसकी परीक्षा अभी बाकी है ।

मैं कई बार सोचता हूं कि फकीर ! तूने सचाई को प्रगट करके क्यों मुसीबत मोल ली है ।

यह संसार संकल्प का है । जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी । यहां जो कुछ भी होरहा है यह सब मनुष्य के अपने ही मन के ख्याल का परिणाम है । इस समय सत्यता का कहीं नाम व निशान नहीं है । हर जगह धोखा, हेरा फेरी है । यही कारण है कि देश में अशान्ति है । झगड़े होरहे हैं । भूचाल और बाढ़ें आरही हैं । केवल धार्मिक जगत के लोगों से ही आशा रक्खी जाती थी कि इनमें ही कोई सचाई हो मगर मेरे अनुभव के अनुसार जितना छल कपट और पर्दा इस धार्मिक जगत में है उतना और कहीं भी नहीं हैं । इसलिये मैंने सचाई की घोषणा की है कि यदि मानव जाति व्यक्तिगत, घरेलू या राष्ट्रीय रूप से अपना कल्याण चाहती है तो मनुष्य अपनी नीयत को ठीक करे । जिन महापुरुषों ने या मजहब वालों ने बात को पर्दे में रख कर अपने निज स्वार्थ के लिये धनवान लोगों से लिया है उसमें सचाई कहां है । इसलिये जगत कल्याण के विचार से मैंने यह काम किया है । दाता दयालजी ने मुझे लिखा था—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ॥

इसलिये मैंने सचाई को खोला है और खोलने में मुझे विवशता है। गद्दियों का होना और शिक्षा के केन्द्र स्थापित करना आवश्यक हैं मगर जो इस काम को करते हैं उनको सोचना चाहिये कि उनके नाम दान देने और सत्संग करने का उद्देश क्या है। यदि उनकी यह नीयत है कि जीवों का जीवन बदले, उनका आचार व्यवहार ठीक हो जाय, उनका भ्रम अज्ञान दूर हो जाय और जीवों को शान्ति मिले तो यह गद्दियां मुबारिक हैं। यदि केवल मंडल बनाना, जन साधारण को एक खास फिरके या पंथ में शामिल करना या अपना नाम विख्यात करना और लोगों से धन दौलत इकट्ठा करना ही है तो यह कर्म के कानून के अनुसार जुर्म है। सचाई यह है कि जो आदमी सत ज्ञान का ज्ञाता होकर अन्तिम पद या जीवन मुक्त अवस्था या विदेह गति में चला जाता है वह यह काम कर ही नहीं सकता। अब मैं हूं। मैं किसी को नाम नहीं देता। मैंने दूसरों को नाम देने का आदेश दिया है। मैं केवल सत्संग कराता हूं। ऐसे ही स्वामीजी जब इस पद पर पहुंच गये तो नाम दान का काम हुजूर महाराज या बाबा जैमलसिंहजी किया करते थे। हुजूर महाराज जब इस अवस्था में आये तो नाम दान का काम पं० ब्रह्मशंकर जी महाराज के सुपुर्द था। और भी सचाई सुनलो। जिन आदमियों को यह गद्दियां मिलती हैं और वह गुरु बनते हैं, यह उनके पिछले जन्मों के कर्मों का फल होता है। मैंने जो कुछ किया या करता हूं और मुझको जो कुछ मान मिला यह ज्योतिष के अनुसार मेरे प्रालब्ध कर्म का फल है। कोई यह न समझे कि मैं किसी गुरु या गद्दी के विरुद्ध हूं। किसी की अन्दरूनी रहनी का मुझे क्या पता है कि उनके अन्तर की दशा क्या है। सम्भव है वह जीवन मुक्त हों, इसलिये मैं

कुछ नहीं कहता। मेरे सत्संग में कई ऐसे सज्जन आते हैं जिनकी रहनी मेरी रहनी से बहतर है लेकिन यश और अपयश अपने कर्मानुसार मिलता है।

सुनहु भरत भावी प्रबल, विलख कही मुनि नाथ।
हानि लाभ जीवन मरन, यश अपयश विधि हाथ॥

मानव की पूजा

(ले०—सेठ दुर्गादास चंडीगढ़)

एक राम दशरथ घर डोले।
एक राम घट घट में बोले॥
एक राम का सकल पसारा।
एक राम सबसे ही न्यारा॥

जो जीव श्री राम की पूजा करता है जो महाराज दशरथ के घर जन्मे थे, वह जीव इनकी मानव समझ कर पूजा करता है। इसमें कोई बुराई नहीं है। वह अजुध्या नगरी के महाराज थे। पूजनीय थे। उन्होंने मानव धर्म की मर्यादा कायम की कि पुत्र को किस प्रकार मात पिता की आज्ञा माननी चाहिये। भाई का भाई से किस तरह व्यवहार हो। पति पत्नी का कैसा व्यवहार हो। प्रजा पर शाशन और इसको किस तरह सुखी रक्खा जाय और मित्र और शत्रु से कैसे व्यवहार हो।

जो भक्त मन्दिर में जाकर राम की मूर्त्ति को स्नान कराता है, वस्त्र पहिनाता है, फिर सुन्दर फूलों की माला इनके गले में डाल

कर माथे पर तिलक लगा कर हाथ जोड़ कर पूजा करता है और भगवान राम को विष्णु का अवतार समझ कर ऐसा करता है, वह तो विष्णु भगवान की पूजा करता है। ऐसी पूजा भक्त के मन को मालामाल कर देती है। भाग्यशाली हैं वह भक्त जो ऐसी पूजा करते हैं। वह कर्म योगी हैं। मानना पड़ेगा कि वह पत्थर की मूर्त्ति की पूजा नहीं करते किन्तु उसकी पूजा करते हैं जो उनका इष्ट है।

सारा संसार ईश्वर को इस संसार का कर्त्ता मान कर उसकी पूजा करता है और मनुष्य को ईश्वर समझ कर उसकी पूजा की जाती है। मुसलमान हजरत मुहम्मद को मानते हैं। इसका नाम अपने कलाम में शामिल कर रक्खा है। यद्यपि मुसलमान इस बात पर गर्व करते हैं कि वह अद्वैत की उपासना है। ईसाई हजरत ईसा को मुक्ति दाता कहते हैं। इसकी शरण लेते हैं। इसको पूजते हैं। इसको खुदा का बेटा मानते हैं, यद्यपि वह संसार से कूंच कर चुका है लेकिन उसको जीवित रक्खा हुआ है। अभी तक इससे अपनी सहायता मांगते हैं। हिन्दू भगवान कृष्ण और भगवान बुद्ध की पूजा करते हैं और आदि सन्त कबीर साहब व नानक साहब मनुष्य ही थे।

यह संसार जीवित पुरुष का सम्मान नहीं करता। मुर्दा पुरुष को पूजते हैं। बीमारी की दशा में क्या आपने कभी किसी मुर्दा डाक्टर से इलाज कराया ? नहीं, और न कभी किसी मरे हुए डाक्टर की लिखी हुई पुस्तक से अपना इलाज किया। हमेशा जीवित डाक्टर की सहायता लेते हैं। जब शारीरिक रोग को दूर करने के लिये जीवित डाक्टर की आवश्यक्ता है फिर कैसे सम्भव है कि आध्यात्मिक रोग का इलाज एक मुर्दा कर सकता है। जीवित पूर्ण पुरुष हमेशा जीव का सहारा बन सकता है, जो अपने बचनों

द्वारा संसार के वातावरण के अनुसार आपका पथ-प्रदर्शन करेगा और ज्ञान देकर समझ देगा। सत्पुरुष जीव की परेशानी को दूर कर देते हैं। सचाई और असलियत से जानकार करा देते हैं जो मरे हुये पुरुष से असम्भव है। जीव का प्रेम और श्रद्धा जीवित मनुष्य से हो सकती है।

जब से सृष्टि की रचना हुई, तब से मनुष्य मनुष्य की पूजा करता आरहा है। इसी में मनुष्य की मुक्ति और भलाई है। लोक परलोक दोनों मिल जाते हैं। केवल मूढ़ जीव तामसिकवृति वाले वृक्षों, पत्थरों और मुर्दों की पूजा करते हैं। मूढ़ जीव हरएक देश और जाति में हैं और इस तरह की पूजा संसार के प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति में अब भी होती है, केवल भारत में ही नहीं।

कहते हैं कि खुदा ने मनुष्य को अपनी सूरत पर बनाया। मनुष्य ईश्वर का प्रतिबिम्ब है। यह बिल्कुल ठीक है इसलिये मनुष्य मनुष्य की पूजा करता है। मनुष्य का जब प्रेम होगा मनुष्य से होगा। अन्य से होना असम्भव है।

कुनद हम जिन्स बाहम जिन्स परवाज।
कबूतर बा कबूतर बाज बा बाज ॥

मनुष्य ही सर्व श्रेष्ठ प्राणी है अर्थात संसार में सब प्राणियों से श्रेष्ठ है। मनुष्य के शरीर को श्रेष्ठ नहीं समझा जाता किन्तु इसके गुणों को और इसके कामों को देख कर मनुष्य मनुष्य के आगे सिर झुकाता है। वह गुण कौन से हैं जिससे सब की दृष्टि उसकी ओर खिंच जाती है।

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि विचार।
कथनी तज करनी करे, तब पावे कुछ सार ॥

कबीर साहब कहते हैं—

करनी करे सो पुत्र हमारा, कथनी कथे सो नाती ।
रहनी रहे सो गुरू हमारा, हम रहनी के साथी ।।

जो मनुष्य ऐसी करनी करते हैं कि उनके जीवन से करनी और रहनी में अन्तर नहीं रहता, इनका हर काम रहनी हो जाता है। उनके जीवन का अंग बन जाता है।

ऐसे जीवित पुरुषों की पूजा होनी चाहिये। 'एक राम का सकल पसारा, ऐसे राम को पूजा जिसने यह संसार पैदा किया, से भी एक पग आगे है अर्थात एक राम सबसे न्यारा।

परमतत्व और अकाल पुरुष सबसे न्यारा है। जो इसका दर्शन, इसका साक्षात्कार कर लेता है और शब्द में समाजाता है वह शान्त-स्वरूप हो जाता है। इसके दर्शन और संगत से शान्ति मिलती है। यह ऐसे पुरुष के लक्षण हैं।

सिवाय मनुष्य के और कोई इस पदवी को नहीं पहुंच सकता। इसलिये मनुष्य ने मनुष्य के आगे सिर झुका दिया। यदि आप इस संसार में ईश्वर के दर्शन करना चाहते हैं तो किसी ऐसे महापुरुष के दर्शन करो और पूजा करो।

सूफी सन्त कादरी बाबा का पत्र
बाबा फकीरचन्द जी महाराज के नाम

मैंने २३ अक्टूबर को दहली पहुँचने की सूचना वहां की सभा को देदी है। मैं स्वयं भी दिल्ली जाने की योजना बना रहा था क्योंकि राष्ट्रपति फखरुद्दीन अलीअहमद साहब का पत्र भी आया था यदि अवसर प्राप्त हुआ तो उनसे भी मुलाकात का समय निकालूँगा।

पिछले दिनों मैंने राष्ट्रपति, उपराष्ट्र पति, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी व अन्य मन्त्रियों तथा राजनीतिक नेताओं से 'मानव एकता और इन्सान बनो मिशन' पर साम्प्रदायिक भेद भाव को दूर करने और पारस्परिक मेल जोल और भाई चारे को बढ़ावा देने के विषय पर बातचीत और पत्र व्यवहार किया जिनके उत्तर मुझे प्राप्त हुए। इन सभी लोगों ने मेरे विचारों से इत्तफाक करते हुए अपनी शुभ कामनायें व्यक्त कीं। मुझे आपसे जो प्रेरणा मिली और आपने इस मिशन पर मुझे जो काम करने के लिए कहा उसको मैं अत्यन्त हर्ष पूर्वक कर रहा हूं और मानवता के मिशन को आगे बढ़ाने में दिन रात लगा हुआ हूं और आपके बाद भी आपके इस मिशन पर जीवन भर काम करता रहूंगा। आपकी दुआएँ और आर्शीवाद मेरे साथ हैं।

इश्क की कीमत इतनी सस्तीं
बिक भी गए और दाम न आए ।।

आपका कादरी बाबा
कादरी आश्रम (खान का कादरिया)
अनूपशहर रोड, अलीगढ़ (यू०पी०)

——०——

राय साहब सुरेन्द्रनाथ जी के प्रति परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज की

श्रद्धांजलि

(१५-९-७४)

मौज की बात है कि इस एक महीने में मुझे अपने तीन प्यारे सज्जनों के इस संसार से चले जाने पर श्रद्धाँजलि देने का अवसर

आया। एक श्री मामचन्द, दूसरे सन्त कृपालसिंह जी महाराज, और तीसरे मेरे छोटे भाई राय साहब सुरेन्द्रनाथ। मामचन्दजी ता० ७ अगस्त को, सन्त कृपालसिंह जी २१ अगस्त को और राय साहब सुरेन्द्रनाथ जी ६ सितम्बर को चोला छोड़ गये।

मैं सोचता हूं कि क्या श्रद्धाँजलि देने से मरने वालों को कुछ लाभ भी पहुँच सकता है या मनुष्य के अपने ही मन का एक भाव है ? साइन्स के इस युग में जब हम देखते हैं कि हमारी बात-चीत बिजली की शक्ति से टैलीविजन के द्वारा या रेडियो स्टेशन के द्वारा लाखों मील दूर चन्द्रमा तक पहुंच सकती है और टैली पैथी के द्वारा एक आदमी एक जगह बैठा हुआ अपने ख्याल की धार को हजारों मीलों तक पहुँचा सकता है जब कि कई चिकित्सक मैस्मेरिज्म के द्वारा दूर बैठे हुये बीमारों का इलाज अपने विचार की शक्ति से करते हैं तो मेरी बुद्धि मानती है कि एक आदमी का विचार वशर्ते कि वह दूसरे का सच्चा हितैषी है दूसरे आदमी तक चाहे वह कहीं भी हो, पहुंच सकता है।

आज पं० पुरुषोत्तमदासजी आये। उनकी लड़की भी उनके साथ थी। राय साहब सुरेन्द्रनाथ इनको पिता के समान मानते थे और उनकी सेवा किया करते थे। लड़की ने बताया कि ७ सितम्बर को प्रातः जब पिताजी जागे (राय साहब ने ६ सितम्बर को चोला छोड़ा) तो उन्होंने बताया कि रात मैंने भयानक स्वप्न देखा और मैं घवरा गया। वह प्रातः भी घबराहट में थे। कहने लगे कि सब साथी जारहे हैं। उन्होंने और भी कई बातें घबराहट में कहीं।

दाता दयालजी महाराज ने एक पुस्तक में लिखा है कि जब उनकी एक लड़की गांव में मरी तो उस समय वह लाहौर में थे। उस समय उनकी लड़की ने उनको आवाज दी कि पिताजी ! मैं जारही हूं। ऐसे ही और भी बहुतसी घटनायें सुनने में आती हैं। लेकिन यह वहां होता है जहां आपस में मोह होता हैं। यह साइंस

का सिद्धान्त है। मेरा अपने भाई के साथ मोह नहीं था किन्तु निस्स्वार्थ प्रेम था। मेरा उसके साथ कोई निजी स्वार्थ नहीं था इसलिये उनकी मृत्यु के बारे में मुझे कोई दृश्य दिखाई नहीं दिया जिससे मुझे पता लगता है कि उनका शरीर छूट गया है यद्यपि जब दाता दयाल जी का चोला छुटा तो उस रात मुझे दृश्य दिखाई दिये कि उनका चोला छूट गया है। वह दृश्य क्यों दिखाई आये ? क्योंकि उनके शरीर के साथ मोह था। मोह और वस्तु है और प्रेम और वस्तु है। मोह में निजी स्वार्थ होता है और प्रेम में निजी स्वार्थ नहीं होता।

यदि सच पूछो तो मुझे इनकी मृत्यु से खुशी हुई, क्योंकि मैं यह जानता हूं कि यहां से सबने चले जाना है। वह बहुत दिनों से बीमार चल रहे थे। और मैं उनको लिखा करता था कि बच्चा ! तुमको जीवन में शारीरिक कष्ट या आर्थिक कठिनाई न हो और तू शान्त चित्त रहे।

इन उपरोक्त सिद्धान्तों के अनुसार मेरा विचार है कि श्रद्धांजलि देने वालों और श्रद्धा से उनकी क्रिया कर्म करने वालों और श्राद्ध करने वालों का प्रभाव मरने वालों पर अवश्य होना चाहिये क्योंकि मरने वाला यदि मोक्ष को प्राप्त नहीं हुआ है तो उसकी आत्मा कहीं तो अवश्य होगी। विचार शक्ति का प्रभाव दूर तक पहुंचता है। ब्रह्माण्डों और ऊपर के लोकों तक जाता है। साइंस सिद्ध करती है कि उपर से ऊपर के बड़े बड़े सूर्यों की किरण यहां तक पहुंचती हैं। यदि वह यहाँ तक आसकती हैं तो वहां तक भी जा सकती हैं इसलिये मैं कह देना चाहता हूं कि हर एक आदमी को प्यारे और रिश्तेदारों की मृत्यु पर श्रद्धाँजलि देनी चाहिये मगर वह रीति-रिवाज के ढंग पर न हो किन्तु वह सच्चे हृदय और सच्चे हित से हो। मेरे विचार में जो आदमी अपने स्वार्थवश किसी को श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं, उसका शायद इतना प्रभाव न हो क्योंकि इस श्रद्धांजलि देने वाले के हृदय में वह निज लाभ जो उसने मरने वालों से

उसके जीवन में प्राप्त किया हुआ है एक प्रकार से धन्यवाद शामिल होता है। इसलिये हिन्दुओं में क्रिया करने वाले ब्राह्मण होते थे। उनको महा ब्राह्मण या ब्रह्म में रहने वाले कहा जाता था। वह निष्काम होते थे और निष्काम भाव से वह शुभ भावना देकर उनकी गति करते थे मगर आजकल के पंडे वैसे नहीं है। यह स्वार्थी हैं। दूसरों से धन दौलत और क्रिया कर्म का सामान लेने की नीयत से कई कुछ करते हैं इसलिये मेरे विचार में इनसे क्रिया कर्म या कोई कर्मकाण्ड कराना केवल एक रस्म है। इससे विशेष लाभ नहीं है।

मुझे खुशी है कि मैंने इन तीनों सज्जनों को श्रद्धांजलि दी। मालूम नहीं कि मेरी श्रद्धाँजलि के फूल उनकी आत्माओं तक पहुंचे या नहीं पहुंचे मगर मैंने अपना भाव अपने सत्संगियों द्वारा प्रगट कर दिया। अब मैं सोचता हूं कि फकीर! तुमने अपना भाव तो प्रगट कर दिया, अब इसका पुस्तकीय रूप क्यों देना चाहते हो? क्या तेरे अन्तर यह भाव तो नहीं है कि लोग तेरे अनुभव को पढ़ कर या सुन कर तेरी प्रशंसा करें? मैं अपने मन को टटोलता रहता हूं। मित्रो! अब संसार के मान बड़ाई और ख्याति का ख्याल तो मेरे मन से जाता ही रहा। मेरी समझ में आया है कि हम जो कुछ यहां कर रहे हैं यह हमारे प्रालब्ध कर्म का फल है या यह प्रकृति का खेल है। हम सब इसमें घसीटे जारहे हैं। जैसे जैसे किसी आदमी के ग्रह पड़े हुए हैं उनके अनुसार वह वैसा करने के लिये विवश है मगर इतना ख्याल मुझे अवश्य आता है—यह मेरा अहंकार समझो या मेरी इच्छा समझो कि मेरे विचारों से पढ़े लिखे और समझदार लोगों के संशय भ्रम दूर हो जांय। यह मैं इसलिये कह रहा हूं कि मेरे इन विचारों और अनुभवों से मेरे अपने संशय भ्रम दूर होगये। मनुष्य जो कुछ समझता है वह उसके विचारों भावों को या तो सन्तुष्टि देता है या उसको घबराहट में डाल देता है

इसलिये मैं यह श्रद्धांजलि अपने कर्मभोग वश या मौज आधीन संसार में प्रगट कर रहा हूं। इस प्रकार की वर्णन शैली ज्ञान, असलियत और सचाई के प्रचार का साधन भी है।

मैं सच्चे हृदय से चाहता हूं कि श्री मामचन्द, सन्त कृपालसिंह जी महाराज और रायसाहब सुरेन्द्रनाथ जी की आत्मायें अगर संसार में हों तो उनको शान्ति मिले।

फकीर

—०—

चेतावनी

कुछ सोच मना, तेरी उमर अकारथ जाय ॥
जब लग तेल दिया में बाती, तब लग हैं सब संगी साथी।
जल गया तेल तो बुझ गई बाती, अब नहिं दृष्टि में घोड़े हाथी ॥
सुपन का भाव दिखाय ॥तेरी उमर०॥
बुधि चतुराई काम न आवे, धन सम्पति कोई संग न जावे।
अन्त समय नर बहु पछतावे, रोवे झींके और चिल्लावे ॥
कोई न होय सहाय ॥तेरी उ०॥
राजा रंक अमीर भिखारी, सब के पीछे काल शिकारी।
बीर सूर योद्धा नर नारी, भूलेंगे अपनी होशियारी ॥
एक न बचने पाय ॥तेरी उ०॥
जो आये सो एक दिन जावें, रहने को कोई यहां न आवें।
चार दिना उत्पात मचावें, अपनी करनी का फल पावें ॥
जम के धक्के खाय ॥तेरी उ०॥
सोच सोच कुछ सोच मना, नहीं तेरा अपना कोई जना।
राधास्वामी चरण शरण में काज बना, भूल भुलावे अपनापना ॥
गुरु के गुन पल पल गाय ॥तेरी उ०॥

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर २१-४-७४)

सतगुरु प्यारे ने सुनाया, मर्म कहानी हो ।
बूझ अबूझ का भेद लखाया, मिल गया पद निर्वानी हो ।
सुरत शब्द की राह लखाई, संत पन्थ की डगर चलाई ।
सहज में अब अपनी बन आई, होगये और ठिकानी हो ॥
जीव ब्रह्म का रूप पिछाना, उपजा हिरदे संतमत ज्ञाना ।
घट का मिटा तिमिर अज्ञाना, पागई अगम निशानी हो ॥
अहंकार मद लोभ त्यागा, क्रोध मोह का तोड़ा धागा ।
सोया भाग आप अब जागा, छूटी आनी जानी हो ॥
सहसकमल गढ़ सुरत से तोड़ा, त्रिकुटी ब्रह्म से नाता जोड़ा ।
ब्रह्मगुफा माया मद फोड़ा, राधास्वामी धाम लखानी हो ॥

यह शब्द आप लोगों ने सुना । मैंने सोचा विचारा । गुरु के दरबार में गया । सत्संग करता रहा । अब बुढ़ापा आ गया । शरीर काम नहीं करता और दिमाग भी कमजोर हो गया है । जीवन किसी खोज में बीता है । सोचता हूँ कि मुझे मिला क्या ? कल प्रेमानन्द की चिट्ठी आई । उसकी स्त्री मर गई और एक वर्ष का बच्चा छोड़ गई । सोचता हूँ कि यह दुनियाँ क्या है ? क्या उससे बचने की कोई सूरत है ? लोगों की अच्छी और बुरी बातें सुनते हैं । अपने साथ भी अच्छी और बुरी घटनायें हुई हैं । कभी खुशी और कभी शोक हो जाता है । कभी दुख और कभी सुख आता है । कहीं सूखा से दुनियाँ मर रही है और कहीं कहीं वर्षा की अधिकता से लोग मर रहे हैं । इन बातों का प्रभाव भी दिमाग पर पड़ता है । किसी न किसी प्रकार का ख्याल तो सबको आता है । फिर सोचता हूँ कि राधास्वामी दयाल या दूसरे

सन्त महात्मा संसार को इन दुखों और सुखों को दूर करने के लिये क्या उपाय बता गये या क्या दे गये ? यह एक प्रश्न है जो मेरे दिमाग में में आता है।

देखो मित्रो ! यदि कहीं सुख हैं तो मर्म प्राप्त करने के बाद है।

सतगुरु प्यारे ने सुनाया, मर्म कहानी हो।

सतगुरु क्या देता हैं जिससे दुख दूर हो जांय ? वह मर्म कहानी क्या है जिससे दुख दूर हो जांय ? यदि तुम यह कहो कि सतगुरु करने से या गुरु की सेवा करने से या गुरु को रुपया देने से तुमको दुख न आये या तुमको घाटा न पड़े या कोई मरे नहीं, तो यह असम्भव है। तुम देखो कि प्रेमानन्द की मां (दयाल की माई) दाता दयाल की चेली है। प्रेमानन्द आचार्य है, सत्संग कराता है और नामदान देता है। उसकी स्त्री जल कर मर गई। फिर गुरु करता क्या हैं ? गुरु मर्म और भेद बताता हैं। जो मर्म मुझे मिला और जिससे मुझे शान्ति मिली वह बताता हूँ। जिस दुनियां में हम रहते हैं इसमें दुख भी है और सुख भी है। जीवन के साथ मृत्यु है। विष के साथ अमृत है। यह द्वन्द का संसार है। इस संसार का कानून ही यही है। यहाँ शुरू से ही ऐसा होता चला आ रहा हैं। यहाँ युद्ध भी होते हैं। राम और रावण का युद्ध, महाभारत का युद्ध। यहां हड़तालें भी होती हैं। सन्त भी बीमार हुये। उनके बच्चे भी मरे। यहां ऐसा होता ही रहता है। यह जो मैंने प्राप्त किया यह आप लोगों से प्राप्त किया। आप से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है लेकिन मैं नहीं होता। यह सारा संसार कर्म-क्षेत्र है। कर्म का चक्र है। कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। एक तो यह मर्म है कि यह सब अपना ही ख्याल है। जैसा ख्याल वैसा हाल जैसी करनी वैसी भरनी। लोग जल जाते हैं। हो सकता है कि उन्होंने किसी को जलाया होगा। लोग लड़ाइयों में मर जाते हैं। उनका भी कर्म भोग होगा। जैसा करोगे वैसा भरोगे। इसलिये मैं डरता हूँ और सोच समझ कर काम करता हूँ मगर फिर भी कभी कभी गिर जाता हूँ।

जो कुछ हमारे साथ दुनियां में हो रहा है यह हमारे कर्म का फल हैं। लेकिन यदि तुम कर्म को नहीं मानते तो फिर तुमको मानना पड़ेगा कि इस सृष्टि को रचने वाला निर्दयी है। कई बार सोचता हूँ कि यह दुनियां कैसे बनी ? हम यह सुनते हैं कि यह सृष्टि परमेश्वर ने बनाई, लेकिन वह कौन है ? यह आप लोगों से समझ आई। जब आप जाग्रत में, स्वप्न में या समाधि में मेरा रूप बनाकर उससे काम ले लेते हैं तो सिद्ध हुआ कि सृष्टि को रचने वाली कोई महाशक्ति है। उसने अपने विचार से यह सृष्टि बनाई। इस सृष्टि के बनाने वाले को संत काल पुरुष या सोहंग पुरुष कहते हैं। इसी का नाम विराट पुरुष हिरण्यगर्भ और अव्याकृत है। फिर यह निश्चय होगया कि यहाँ तो यह रगड़े झगड़े होते ही रहेंगे। इसलिये यह समझ आई कि इन दुखों से बचने के लिये इस दुनियाँ की ओर से अपनी दृष्टि फेर लो। आप सोचो कि जिनको यह पता नहीं है कि अरब और इस-रायल की लड़ाई हो रही है वह सुखी हैं। इसलिये सन्त कहते हैं कि अपनी सुरत या तवज्जह को काल और माया की ओर से फेर कर सतलोक की ओर ले जाओ। जितनी जितनी किसी के साथ आसक्ति है उतना ही दुख और सुख है। दुनियां में सुखी रहने का यही ढँग है कि दुनियाँ को छोड़कर पीछे हट जाओ। अब मैं मस्त रहने की कोशिश करता हूँ।

बूझ अबूझ का सार समझाया, सूझ असूझ की बात बताया।
तब सतपद का भेद लखाया, मिल गया पद निर्वानी हो॥

मुझे इस बूझ अबूझ की समझ नहीं आती थी। दातादयाल ने मुझ पर दया कर दी जो यह काम देदिया और आप लोगों के अनुभवों से मुझे समझ आई। मेरे जीवन ने पलटा खाया। अब तवज्जह बाहर की ओर नहीं जाती। संसार की ओर से तुम्हारा ख्याल तब हटेगा जब तुम मन, चित, बुद्धि और अहंकार से परे चले जाओगे अर्थात् दसवें द्वार से आगे जाओगे।

बाबा सावनसिंह जी महाराज कहा करते थे कि दसवें द्वार से लांघो तो आगे सत्गुरु है लेकिन दसवें द्वार से आगे तुम तब जा सकोगे जब तुमको भेद या रहस्य का पता होगा। लोग अभ्यास करते हैं लेकिन फिर फँस जाते हैं।

समाधि के समय तो तुम थोड़ी देर के लिये तुम बच जाओगे लेकिन समाधि के बाद तुम तभी बच सकते हो जब तुमको यह मर्म ज्ञात है अन्यथा फिर दुनियां में फंस जाओगे। मैं तुमको वह बात बता रहा हूं जिससे तुमको अधिक परिश्रम न करना पड़े।

गुरु मिले तब काह कमाना।

फिर कमाई काहे की ? केवल विचार को बदलना है। मगर यह करेगा कौन ? जिसको इस संसार में दुख आता है और वह उससे बचना चाहता है।

सुरत शब्द की राह दिखाई, सन्त पन्थ की डगर चलाई।
सहज में अब अपनी बन आई, होगये ठौर ठिकानी हो॥

दाता दयाल जी का इससे क्या भाव है यह वही जानते होंगे। मैं जो समझता हूँ वह यह है कि निर्वाण का अर्थ यह है कि फूँक मार के उड़ा देना। जिसको मर्म मिल जाता है उसको मन, चित, बुद्धि, अहंकार की समझ आ जाती है। तब इनके खेल की समाप्ति हो जाती है। जो कुछ बाकी रह जाता है वह तुम स्वय हो। तुम स्वयं सत हो। तुम्हारा अपना रूप अमर है। यही निर्वाण है। सांसारिक विचारों की ओर ध्यान न देकर और अपने आप को अपने आप में ठहराना ही निर्वाण पद है। रात को पुरुषोत्तम दास और प्रेमानन्द का ख्याल आया। फिर सोचा कि यह तो दुनियां के झगड़े हैं। तुम किस किस की चिन्ता करोगे ? मैंने कोई महापाप किया हुआ है जो अपनी चिन्ता तो क्या दूसरों की चिंता मुझे मारती है। मेरे पास दुखी आते हैं। उनके दुख को अपना दुख समझता हूँ। फिर उन को उससे बचने का उपाय बताता हूँ। तो शान्ति है निर्वाण में और निर्वाण तब मिलेगा जब सत्संग में बात को समझकर तुम मर्म को जानोगे। मुझे इस मर्म से शान्ति मिली है। मैं राम को या मालिक को ढूंढता था। उसके लिये यह सुना करता था कि नेकी करो, हक हलाल की कमाई करो। जीवन भर उसी धुन में रहा। अब पता लगा कि यह दुनियां तो ऐसे ही चलती

रहेगी। तुम इस ओर ध्यान न दो और अपने आपको अपने आप में ठहराओ। इसी का नाम निर्वाण है। यहां आकर शान्ति मिलती है।

ईश्वर की भक्ति से ऋद्धि सिद्ध, आनन्द तो मिलेगा मगर शान्ति नहीं मिलेगी क्योंकि यह द्वन्द की रचना है। शान्ति यदि है तो मर्म में है। चित्त वृत्ति को संसार की ओर से हटाओ मगर यह हटेगी नहीं। यदि तुमको यह ज्ञान हो भी जाय फिर भी सुरत को इस ओर से हटाना बहुत कठिन है। अत: शान्ति प्राप्त करने के लिये जब तक तुम प्रकाश और शब्द में नहीं जाओगे तब तक तुम्हारी सुरत इस ज्ञान में नहीं रह सकती। अत: प्रकाश और शब्द का साधन आवश्यक है। बुद्धि से तुमने इसको समझ लिया मगर जब तक तुमको दूसरी ओर सुरत को लगाने का अवसर नहीं है और केन्द्र नहीं है तुम सुरत को इस ओर से मोड़ नहीं सकते।

जीव ब्रह्म का रूप पिछाना, उपजा हिरदै संत मत ज्ञाना।
घट का मिटा तिमिर अज्ञाना, पाई अगम निशानी हो॥

लोग जीव और ब्रह्म में फँसे हुये हैं। पता लग गया कि ब्रह्म क्या है और जीव क्या है। ब्रह्म है प्रकाश। जब प्रकाश शरीर में आ जाता है तो मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार पैदा हो जाते हैं। जब तक यह चारों स्थित हैं तब तक जीव है। जब इनसे परे चला गया तो ब्रह्म है। लोगों ने जीव और ब्रह्म पर पुस्तकें लिख लिखकर संसार को उलझन और भ्रम में डाल दिया है। जब शरीर में प्रकाश आ जाता है तो उससे शरीर में रक्त का दौरा शुरू हो जाता है और मन, चित, बुद्धि और अहंकार उत्पन्न हो जाते हैं। छोटे बच्चों में ज्यों ज्यों रक्त का दौरा बढ़ता जायगा त्यों त्यों उनको समझ आती जायगी। प्रकाश ही ब्रह्म हैं। प्रकाश शरीर में फैलता है। अभ्यास करने से रक्त का दौरा तेज हो जाता है और बुद्धि भी तेज हो जाती है। इसलिये अभ्यासियों की बुद्धि तीक्ष्ण होती है।

अहंकार मद लोभ त्यागा, क्रोध मोह का तोड़ा धागा।

आने जाने वाली हमारी बुद्धि और मनन शक्ति है। जिसने बुद्धि की ओर से तवज्जह को हटाकर प्रकाश और शब्द की ओर लगाया और वहाँ केन्द्र बना लिया तो स्वयं ही सब कुछ छूट जायगा।

सहस कमल दल सुरत से तोड़ा, त्रिकुटी ब्रह्म से नाता जोड़ा।
ब्रह्म गुफा माया मद फोड़ा, राधास्वामी धाम लखानी हो॥

सहस कमल दल में मन अनेक प्रकार के विचार दौड़ाता रहता है। समझ या मर्म मिल जाने से जब सुरत का ध्यान इस ओर से हट जाता है तो विचार या सहसकमल का गढ़ तो स्वयं ही टूट गया और आगे प्रकाश अर्थात् ब्रह्म में पहुंच गये। जब यह ज्ञान हो जाता है तो फिर बाकी तुम्हारा अपना आप ही रह जाता है। तुम ही वास्तव में राधास्वामी धाम हो। यह शब्द तो केवल उसको प्रगट करने के लिये हैं।

राधा आदि सुरत का नाम।
स्वामी आदि शब्द पहिचान॥

वह जो आदि शब्द है उसमें सुरत के लग जाने का नाम ही राधास्वामी है। वह कोई ईंट पत्थरों का बना हुआ नहीं है।

राधास्वामी मत मेरे लिये नया था। बाणी में सबका खण्डन था। यह बाणी पढ़ कर सिर में चक्कर आगया। इसलिये मैं देखना चाहता था कि संत मत का बड़प्पन क्या है। इसलिये मेंने इस धुन में सारा जीवन व्यतीत किया। दाता दयाल मुझे बहुत समझाया करते थे मगर बात मेरी समझ में नहीं आंती थी। इसलिये उन्होंने मुझे यह काम दिया। इसके करने से और आप लोगों के अनुभवों से मेरी आँख खुली। केवल इस ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, बात मेरी समझ में आगई। इसलिये जीवित पूर्ण पुरुष के सत्संग की बड़ी आवश्यकता है। यह नहीं कि बाणी गलत है मगर बाणी भेद नहीं देती। हर एक आदमी बाणी को समझ नहीं सकता। दाता दयाल जी ने यह मर्म लिख तो दिया मगर समझेगा कौन ? गुरु मर्म

पुरुषोत्तमदास का ख्याल तो रहता ही है । शाम को प्रेमानन्द की चिट्ठी मिली तो कुछ देर के लिये मुझे भी अशान्ति आगई । प्रेमानन्द की मां भक्तिनी है । वह स्वयं आचार्य है । नामदान देता है और सत्संग कराता है । इसकी कोई सहायता न हुई । उसकी स्त्री जल गई । फिर पुरुषोत्तम दास का ख्याल आया । जितना किसी के साथ सम्बन्ध होता है उतना ही उसका दुख और सुख होता है । मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि यदि तुम लोग यह चाहो कि तुम दुख और सुख से बच जाओ तो जब तक कोई आदमी मन के चक्कर से नहीं निकलता, वह नहीं बच सकता मगर सब तो निकल नहीं सकते । इस भरोसे पर मत रहना कि तुम एक दो घंटे प्रतिदिन अभ्यास करते हो । अपना कर्म सुधारो । अपनी जिभ्या के स्वाद के लिये तुम दूसरों की हत्या करते हो या मारते हो तो वह भी तुम से बदला लेगा । कर्म का फल तो अवश्य मिलेगा, चाहे इस जन्म में मिले चाहे अगले जन्म में मिले । चाहे सन्त हो या असन्त हो, कर्म किसी को क्षमा नहीं करता । भीष्म पितामह छः महिने बाण सैय्या पर पड़े रहे । कृष्ण जी उनसे मिलने आये तो भीष्म पितामह ने कहा कि महाराज ! सौ जन्म तक तो मैंने कोई ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिसका मुझे यह दण्ड मिला कि मेरा कुल शरीर छलनी होगया है । कृष्ण भगवान ने कहा कि और पीछे देखो । तुमने एक सांप को एक कांटेदार झाड़ी से मारा था और उसका शरीर छलनी होगया था । उस कर्म का तुमको दण्ड मिला है ।

अब तुम सोचो कि भीष्म पितामह शत प्रतिशत ब्रह्मचारी था और इतना ब्रह्मचारी था कि अपने सौ जन्म तक का पता था और वह सौ जन्म से भी पहिले किये हुये कर्म के फल से न बच सका तो तुम लोग जो हर समय हेरा फेरी चारसौबीस करते हो और अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का माल हड़प करते हो और अनेक प्रकार के कुकर्म करते हो तो तुम कैसे बच सकोगे । कर्म का फल अवश्य मिलेगा । इसलिए मैंने शिक्षा को बदला है

विचार को बदलो चाहे किसी के चेले बन जाओ और किसी का भी सुमिरन ध्यान करो मगर अपनी नीयत को साफ रक्खो।

दुनियां ने गुरु के रूप को नहीं समझा। गुरु नाम है ज्ञान, समझ और विवेक का। गुरु न जन्मता है और न मरता है इसलिये कोई भी देहधारी गुरु नहीं है। हां देहधारी की बाणी गुरु है क्योंकि वह ज्ञान है।

बाणी गुरु गुरु है बाणी, बाणी अमृत सारे।

यदि अन्त समय तुम विचारों के झगड़े में न पड़े और प्रकाश और शब्द आजाय तो तुम पार हो जाओगे। शब्द है गुरु और गुरु के चरण हैं प्रकाश। यदि अन्त समय बाबा फकीर या कोई गुरु या राम या कृष्ण लेने आजाय तो तुमको दूसरा चोला लेना पड़ेगा। इसलिये बार बार कहा जाता है कि सत्-गुरु करो मगर सत्संग के लिये कौन आता है। मेरे पास तो जो आता है वह दुनियाँ के दुखों का मारा हुआ ही आता है। यदि किसी को लाभ हो जाता है तो यह उसका अपना विश्वास है। मैं न कुछ कर सकता हूँ और न कुछ करता हूँ।

गुरु ही तेरे सहाई रे मन, गुरु ही तेरे सहाई।
सपने में तोहि राज मिला है, सम्पति मान बढ़ाई।

यह गुरु लोगों को जो मान मिला है यह क्या है? मैंने सन्त कृपालसिंह जी से कहा था कि आपको या मुझको या और गुरुओं को जो यह गद्दियां मिली हैं या मान मिला है यह हमारे पिछले जन्म के कर्म हैं। जो कर्म हम अब कर रहे हैं, उनका फल भी हमको भोगना पड़ेगा। आप सोचो कि कितना अत्याचार है कि कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता लेकिन लोगों को सच्ची बात नहीं बताई जाती। पहिले तो मैं यह समझता था कि शायद दूसरे सन्त लोगों के अन्तर जाते होंगे लेकिन यहां तीन चार घटनायें एसी हुई कि लोगों ने कहा कि बाबा फकीर और बाबा चरनसिंह आये हैं पालकी लाये हैं आदि आदि। उनमें से एक यह ओमप्रकाश दर्जी बैठा है। इसका बाप मर गया। इसने बताया कि मरते समय बाप ने कहा था कि बाबा

ओ३मप्रकाश ने बताया कि मैं अपने बाप की लाश के पास बैठा हुआ था। रात का समय था। मेरी आँख बन्द थी। मैं देखता हूँ कि आगे आप जारहे हैं और पीछे बाबा चरनसिंह जी जारहे हैं। आप दोनों के बीच में मेरा बाप जारहा था। आगे से कोई आदमी आया और मेरे बाप को पकड़ने लगा। आपने रोका कि यह मेरा जीव है तुम इसको नहीं ले जा सकते। मैं न ओ३म प्रकाश को जानता हूँ न इसके बाप को। सच और झूंठ का यह स्वयं जिम्मेदार है।

इस घटना के कुछ समय बाद बाबा चरनसिंह जी होशियारपुर आये। मैंने कहला भेजा कि मैं मिलना चाहता हूँ। उन्होंने अपनी कार भेज दी। मैं उनके पास गया। मैंने उनसे कहा कि मेरे गुरु महाराज ने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी थी। इसलिये यह काम करता हूँ। अब आप बताइये कि मैं यह काम करूँ या न करूँ। उन्होंने कहा कि बड़ी खुशी से करो। मैंने कहा तो फिर एक बात बताइये। यहाँ दो तीन मृत्यु हुई। मरते समय उन्होंने कहा कि बाबा चरनसिंह जी आये और बाबा फकीर भी आये। मैंने कहा कि मैं तो गया नहीं, न मुझे पता है। क्या आप गये थे ? उन्होंने कहा कि मैं भी नहीं गया था। मैंने कहा कि फिर आप अपनी संगत को सचाई वर्णन करो। उनके सैक्रेटरी ने कहा कि आप सच कहते हैं लेकिन सच कहने का दस्तूर नहीं। मंसूर ने अनलहक कहा। सूली पर चढ़ाया गया। मैंने कहा कि मैं खुदा नहीं बनता न अनलहक कहता हूँ और न हक बनता हूँ।

मैं तुम लोगों को सचाई बयान करता हूँ। यदि कोई यह समझता है कि मेरी शिक्षा सचाई पर आधारित है और उसके प्रचार की आवश्यकता तो इच्छा हो तो मदिर की सहायता करो।

मैंने संत कृपालसिंह जी को लिखा था कि मैंने सचाई का डंका बजाया है।

आप लोगों को एक बात कहता हूँ कि मन को गुरु के अर्पण करदो। गुरु बाबा फकीर नहीं है बाबा फकीर की जो वणी है वह गुरु है, उस पर अमल करो। जो महात्मा पर्दा रखता है और झूठ को सच बनारहा है उसका कहाँ ठिकाना ? क्या वह दुनियां को तारने आया है। वह तो स्वयं डुब गया।

दुखों का कारण

(ले०—एक महात्मा)

प्यारे पाठकगण ! समय हाथों हाथ निकला जा रहा। आयु दिन व दिन घटती जारही है। मृत्यु पग पग आगे बढ़ती आरही है। हमारा कर्त्तव्य है कि जीवन के उद्देश्य को जानें, पुनः उस पर आचरण करें, क्योंकि वर्तमान काल में चारों ओर विरुद्ध भावनाओं का शासन है जिसके कारण हैं—

सब से पहले विदेशियों की नकल करना। इसने इस तरह का जाल फैला रखा है जिससे निकलना बहुत कठिन होगया है। इसमें वर्तमान शिक्षा ऐसी दी जारही है जो न केवल बुद्धि और दिमाग को ही तीक्षण करती हैं किन्तु हृदय को मन्द तथा अपवित्र करती है। वे कांटे हैं काम लोभ अहंकार तथा स्वार्थ। शिक्षा के बाद सभ्यता को लीजिये सभ्यता ऐसी है जो भारतीय सभ्यता के विरुद्ध है। हमारी सभ्यता कहती है जितना दे सकते हो दूसरों को दो और जहां तक बन सके प्राणिमात्र की सेवा करो। यह सुख शान्ति प्राप्त करने का साधन है परन्तु आधुनिक सभ्यता कहती है (अथवा प्रत्यक्ष है) जितना छीन सकते हो छीनों और दूसरों से पूरी सेवा लो। उन्हें अपने अधीन बनाओ तथा अपने पांव तले कुचलो। यही भाव सरासर दुःखों का कारण है। इस प्रकार के विचार का मनुष्य सच्चा सुख स्वप्न में भी नहीं देख सकता।

हमारी सभ्यता कहती है सादा बनो। आवश्यकताओं को घटाओ। तृष्णायें कम करो। प्राणीमात्र से अपनी आत्मा के समान प्रेम करो। परन्तु आज का युग कहता है-बन ठन कर रहो। अधिक से अधिक ऐश्वर्य की सामग्री प्राप्त करो। यह है पश्चिमी सभ्यता।

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)
सार का सार भाग १ व २	४)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)५०
संत सत्गुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३,	३)
सतपद	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)
सुरत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु बन्दना	)७५
अजायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
पांच नाम की व्याख्या	१)२५
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम विकास	१)
निर्माण	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व २	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	२)२५
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	५)
अद्भुत मोती	)७५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)५०
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)५०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)५०
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
फकीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)२५
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)

Regd. No. L-ALG—28

महारामायण सजिल्द	८-००
गीता भाग १ व २	४-००
नानक योग	५-००
राधास्वामी योग	८-००
कबीर योग भाग १,२,३	७-००
कर्मयोग रहस्य	१-००
Light on Anand Yog	३-००
आनन्द योग प्रकाश	२-५०
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	२-५०
कबीर की साखी	३-००
पंथ सन्देश	३-००
शब्द गुञ्जार भाग १,२ ३	६-५०
विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान	२-००
विचार दर्पण	१-५०
फकीर भजनावली	१-००
जीवन सुधा	१-२५

शिक्षाप्रद, रोमांचकारी मोती और शाही सिलसिले के उपन्यास हैं

नई पुस्तकें

निर्वाण	१-००
सहज भक्ति	१-००
उस घर की खोज	१-००
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१-००
हिसक मोती	२-००
ान योग	१-५०

ग्राहक सं०

श्रीमान

397. C. Gajraj Mysker Hindi Pandit
Rathode Building
Pochamma Gali
Jumerat Bazar
Nizamabad (A.P.)

सम्पादक व प्रकाशक—
देवीचरन मीतल
लेखराज नगर,
अलीगढ़।

nted by S.C. Mital,Dayal Printing Pres ,Aligarh